सितारा क़ैसरः

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: सितारा क़ैसर:
Name of book	: Sitarah Qaisarah
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani The Promised Messiah and Mahdi[as]
अनुवादक	: डॉ अन्सार अहमद, पी एच. डी., आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph. D, Hons in Arabic
टाईपिंग, सैटिंग	: नईम उल हक़ क़ुरैशी मुरब्बी सिलसिला
Typing Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) जुलाई 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) July 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत
हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

सितारा कैसर:

यह पुस्तिका 24 अगस्त 1899 ई. को प्रकाशित हुई। इस पुस्तकि में आप ने उसी विषय की नवीन शैली में पुनरावृत्ति की है जो तुहफ़ा क़ैसर: में लिखा था और वास्तव में यह पुस्तिका तुहफ़ा क़ैसर: का स्मरण कराना है। इसमें भी अंग्रेज़ी सरकार की धार्मिक उदारता तथा धार्मिक स्वतंत्रता जो उसने समस्त धर्मों को समान रूप से दी हुई थी का वर्णन करते हुए सलीबी आस्था का अत्युत्तम शैली में खण्डन किया है और अपने मसीह मौऊद होने का दावा प्रस्तुत किया है।

महामान्य आदरणीय महारानी क़ैसर: हिन्द
शहंशाह-ए- हिन्दुस्तान-व-इंगलिस्तान
अल्लाह तआला उनकी प्रतिष्ठा को सदैव स्थापित रखे

सर्व प्रथम यह दुआ है कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा हमारी इस महामान्य क़ैसर: हिन्द की आयु में बहुत-बहुत बरकत प्रदान करे और प्रतिष्ठा एवं शान-शौकत में उन्नति दे और परिजनों एवं पुत्रों की कुशलता से आंख शीतल रखे। तत्पश्चात इस पत्र का लेखक जिसका नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी है जो पंजाब के एक छोटे से क़ादियान नामक गांव में रहता है जो लाहौर से लगभग सत्तर मील की दूरी पर पूरब-उत्तर के कोने में स्थापित और ज़िला-गुरदासपुर में है यह निवेदन करता है कि यद्यपि इस देश के सामान्यतया समस्त रहने वालों को उन आरामों के कारण जो महामान्य क़ैसर: हिन्द के सामान्य न्याय, प्रजा-प्रतिपालन और इन्साफ़ से प्राप्त हो रहे हैं और सार्वजनिक शान्ति के उपाय और जनता के सभी वर्गों के ऐश्वर्य के प्रस्ताव के कारण जो करोड़ों रुपए के व्यय तथा असीम दानशीलता से प्रकटन में आए हैं। जनाब महामान्य महारानी (अल्लाह आपकी प्रतिष्ठा हमेशा रखे) से अपने विवेक, बुद्धि तथा उपकार के अनुसार निरन्तर प्रेम और हार्दिक आज्ञापालन है, सिवाए कुछ थोड़े लोगों के जो मैं सोचता हूं कि छुपे ऐसे भी हैं जो वहशियों और दरिन्दों की तरह गुज़ारा करते हैं परन्तु इस ख़ाकसार को उस पहचान और जानकारी के कारण जो इस श्रेष्ठ सरकार के अधिकार के बारे में मुझे प्राप्त है जिसे मैं अपनी पुस्तक **तुहफा क़ैसरिया** में विस्तारपूर्वक

लिख चुका हूं वह उच्च कोटि की निष्कपटता, प्रेम और आज्ञापालन का जोश महामान्य महारानी और उसके आदरणीय अफ़सरों के बारे में प्राप्त है कि मैं ऐसे शब्द नहीं पाता जिनमें उस निष्कपटता का अनुमान वर्णन कर सकूं। इसी सच्चे प्रेम और निष्कपटता की तहरीक से साठ वर्षीय जुबली के आयोजन पर मैंने एक पुस्तक क़ैसर: हिन्द दाम अक्बालहा के नाम से लिख कर और उसका नाम **तुहफा क़ैसरिया** रख कर महामान्य की सेवा में दरवेशों वाले उपहार के तौर पर प्रेषित किया था और मुझे दृढ़ विश्वास था कि इसके उत्तर से सम्मानित किया जाएगा और आशा से बढ़कर मेरी बुलन्दी का कारण होगा। इस आशा तथा विश्वास का कारण महामान्य कैसरा हिन्द के दो उच्चकोटि के शिष्टाचार थे जिनकी समस्त पूर्वी देशों में धूम है और महामान्य महारानी के विशाल देश के समान विशालता और उदारता में ऐसे अद्वितीय हैं कि उनका उदाहरण दूसरे स्थान पर तलाश करना असंभव विचार है। परन्तु मुझे नितान्त आश्चर्य है कि मैं बादशाहों वाले एक वाक्य से भी कृतज्ञ नहीं किया गया और मेरी अन्तर्आत्मा इस बात को कदापि स्वीकार नहीं करती कि विनयपूर्ण उपहार अर्थात् 'तुहफ़ा क़ैसरिया' महामान्य महारानी की सेवा में प्रस्तुत हुआ है। और फिर मैं उसके उत्तर से कृतज्ञ न किया जाऊं। निस्सन्देह कोई अन्य कारण है जिसमें महामान्य महारानी क़ैसर: हिन्द के इरादे और इच्छा और जानकारी का कुछ हस्तक्षेप नहीं इसलिए उस सुधारणा ने जो मैं महामान्य महारानी की सेवा में रखता हूं दोबारा मुझे विवश किया कि मैं उस तुहफे अर्थात् पुस्तक तुहफ़ा क़ैसरिया की ओर प्रशंसनीय महारानी को ध्यान दिलाऊं और शाहाना

स्वीकारिता के कुछ शब्दों से ख़ुशी प्राप्त करूं। **इसी उद्देश्य से यह पत्र रवाना करता हूं**। और मैं महामान्य क़ैसर: हिन्द की सेवा में ये कुछ शब्द वर्णन करने का साहस करता हूं कि मैं पंजाब के एक प्रतिष्ठित ख़ानदान-ए-मुग़लिया में से हूं और सिक्खों के काल से पूर्व मेरे बुज़ुर्ग एक स्वाधीन रियासत के वाली (रईस) थे और परदादा साहिब मिर्ज़ा गुल मुहम्मद इतने दक्ष मनीष महा साहसी, सत्प्रकृति और हुकूमत की खूबियों से विभूषित थे कि जब देहली के चुग़ताई बादशाहों की हुकूमत अयोग्यता, भोग-विलास, सुस्ती और साहस की कमी के कारण कमज़ोर हो गई तो कुछ मंत्री गण इस कोशिश में लगे थे कि कथित मिर्ज़ा साहिब को जो सामान्यकूल कार्य करने प्रजा का प्रतिपालन की समस्त शर्तें अपने अन्दर रखते थे और शाही खानदान में से थे देहली के तख़्त पर बिठाया जाए। परन्तु चूंकि चुग़ताई बादशाहों के भाग्य और आयु का प्याला भर चुका था इसलिए यह प्रस्ताव सामान्य स्वीकृति में न आया और हम पर सिक्खों के काल में बहुत से अत्याचार हुए और हमारे बुज़ुर्ग रियासत के समस्त देहात से बेदख़्ल कर दिए गए और एक घड़ी भी अमन की नहीं गुज़रती थी और अंग्रेज़ी सरकार के शुभ आगमन से पहले ही हमारी सम्पूर्ण रियासत मिट्टी में मिल चुकी थी और केवल पांच गांव शेष रह गए थे और मेरे पिता श्री मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा (स्वर्गीय) जिन्होंने सिक्ख-काल में बड़े-बड़े आघात सहन किए थे अंग्रेज़ी सरकार के आने के ऐसे प्रतीक्षक थे जैसे कि कोई अत्यन्त प्यासा पानी का प्रतीक्षक होता है। और फिर जब अंग्रेज़ी सरकार का इस देश पर अधिकार हो गया तो वह इस नेमत अर्थात् अंग्रेज़ी

सरकार की स्थापना से ऐसे प्रसन्न हुए कि जैसे उनको जवाहरात का ख़ज़ाना मिल गया। वह अंग्रेज़ी सरकार के बड़े शुभ चिन्तक, प्राण न्योछावर करने वाले थे। इसी कारण उन्होंने 1857 ई. के ग़दर के दिनों में पचास घोड़े सवारों सहित उपलब्ध करके अंग्रेज़ी सरकार को बतौर सहायता दिए थे। इसके पश्चात् वह भी हमेशा इस बात के लिए तैयार रहे कि यदि फिर भी किसी समय उनकी सहायता की आवश्यकता हो तो दिल और जान से इस सरकार को सहायता दें। और यदि 1857 ई. का ग़दर कुछ और भी सहायता देने को तैयार थे। तो उनका जीवन इस प्रकार गुज़रा। फिर उनके निधन के बाद यह ख़ाकसार सांसारिक कार्यों से पूर्णतया पृथक होकर ख़ुदा तआला की ओर व्यस्त हुआ, और मुझ से अंग्रेज़ी सरकार के पक्ष में जो सेवा हुई वह यह थी कि मैंने पचास हज़ार के लगभग पुस्तकें और पत्रिकाएं तथा विज्ञापन छपवा कर इस देश और दूसरे इस्लामी देशों में इस निबंध के प्रकाशित किए कि अंग्रेज़ी सरकार हम मुसलमानों की उपकारी है। इसलिए प्रत्येक मुसलमान का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि इस सरकार का सच्चा आज्ञापालन करे और हृदय से इस सरकार का कृतज्ञ और दुआ करने वाला रहे। ये पुस्तकें मैंने विभिन्न भाषाओं अर्थात् उर्दू, फ़ारसी, अरबी में लिखकर इस्लाम के समस्त देशों में फैला दीं। यहाँ तक कि इस्लाम के दो पवित्र शहरों मक्का और मदीना में भी भली भांति प्रकाशित कर दीं और रूम की राजधानी क़ुस्तुनतुनिया, शाम, मिस्र, काबुल, अफ़ग़ानिस्तान के विभिन्न शहरों में जहां तक संभव था प्रकाशित कर दी गईं जिसका परिणाम यह हुआ कि लाखों लोगों में जिहाद के वे ग़लत विचार

त्याग दिए जो ना समझ मुल्लाओं की शिक्षा से उनके दिलों में थे। मुझ से यह एक ऐसी सेवा प्रकटन में आई कि मुझे इस बात पर गर्व है कि ब्रिटिश इण्डिया के समस्त मुसलमानों में से मुसलमान इसका कोई उदाहरण दिखा नहीं सका। और मैं इतनी सेवा करके जो बाईस वर्ष तक करता रहा हूं इस उपकारी सरकार पर उपकार नहीं करता, क्योंकि मुझे इस बात का इक़रार है कि इस मुबारक सरकार के आने से हमने और हमारे बुज़ुर्गों ने एक लोहे के जलते हुए तंदूर से मुक्ति पाई है। इसलिए मैं अपने समस्त परिजनों सहित हाथ उठाकर दुआ करता हूं। कि हमारे अल्लाह! इस बरकत वाली क़ैसर: हिन्द को पर्याप्त समय तक हमारे सरों पर सलामत रख और इसके प्रत्येक क़दम के साथ अपनी सहायता की छाया सलंग्न रख और इसकी प्रतिष्ठा के दिन बहुत लम्बे कर।

मैंने तुहफ़ा कैसरिया में जो हुज़ूर क़ैसर: हिन्द की सेवा में भेजा गया है यही परिस्थितियां और सेवाएं तथा (धर्म की ओर) निमंत्रणों के निवेदन किए थे। और मैं अपनी महामान्य महारानी के विशाल शिष्टाचार पर दृष्टि रख कर प्रतिदिन उत्तर का आशान्वित था और अब भी हूं। मेरे विचार में यह असंभव है कि मेरे जैसे दुआ करने वाले का वह विनयपूर्ण तुहफ़ा जो पूर्ण निष्कपटता के कारण ख़ून-ए-दिल से लिखा गया था। यदि वह हुज़ूर महामान्य महारानी क़ैसर: हिन्द ادام اللہ اقبالھا (अल्लाह तआला उनकी प्रतिष्ठा को सदैव स्थापित रखे) की सेवा में प्रस्तुत होता तो उसका उत्तर न आता। अपितु अवश्य आता, अवश्य आता। इसलिए मुझे इस विश्वास के कारण जो जनाब क़ैसर: हिन्द के दया से भरपूर शिष्टाचार पर

पूर्ण दृढ़ता से प्राप्त है इस स्मरण कराने के पत्र को लिखना पड़ा और इस पत्र को न केवल मेरे हाथों ने लिखा अपितु मेरे हृदय ने विश्वास का भरा हुआ ज़ोर डाल कर हाथों को इस श्रद्धापूर्ण पत्र के लिखने के लिए चलाया है। मैं दुआ करता हूं कि कुशलता और प्रसन्नता के समय में ख़ुदा तआला इस पत्र को हुज़ूर क़ैसर: हिन्द (अल्लाह तआला उनकी प्रतिष्ठा को सदैव स्थापित रखे) की सेवा में पहुंचाए और फिर महामान्य महारानी के हृदय में इल्हाम करे कि वह इस सच्चे प्रेम और सच्ची निष्कपटता को प्रशंसित महारानी के लिए मेरे हृदय में है अपनी पवित्र बुद्धिमत्ता से पहचान लें और प्रजा के प्रतिपालन की दृष्टि से दयापूर्ण उत्तर से कृतार्थ करें। और मैं अपनी महामान्य जनाब महारानी क़ैसर: हिन्द की सेवा में इस ख़ुशखबरी को पहुंचाने के लिए भी मामूर हूं कि जैसा कि पृथ्वी पर तथा पृथ्वी के संसाधन से ख़ुदा तआला ने अपनी पूर्ण दया और पूर्ण हित से हमारी क़ैसर: हिन्द (अल्लाह तआला उनकी प्रतिष्ठा को सदैव स्थापित रखे) की सरकार को इस देश तथा अन्य देशों में स्थापित किया है ताकि पृथ्वी को न्याय और अमन से भरे। ऐसा ही उसने आकाश से इरादा किया है कि इस शहंशाह मुबारका क़ैसर: हिन्द के हार्दिक उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए जो न्याय, अमन जन सामान्य की समृद्धि, उपद्रव का निवारण, आचार-व्यवहार की दुरुस्ती और वहशियों जैसी हालतों का दूर करना है। उसके मुबारक काल में अपनी ओर से और परोक्ष से तथा आकाश से कोई ऐसी रूहानी व्यवस्था स्थापित करे जो महामान्य महारानी के हार्दिक उद्देश्यों को सहायता दे और जिस अमन शान्ति और मैत्री के बाग़

को आप लगाना चाहती हैं आकाशीय माध्यमों से उसमें सहायता करे। अत: उसने अपने अनादि वादे के अनुसार जो मसीह मौऊद के आने के बारे में था आकाश से मुझे भेजा है ताकि मैं उस मर्दे ख़ुदा के रंग में होकर जो बैतुल्लाह में पैदा हुआ और नासिरा में पोषण पाया महामान्य महारानी के नेक और मुबारक उद्‌देश्यों की सहायता में व्यस्त हों। उसने मुझे असीम बरकतों के साथ स्पर्श किया और अपना मसीह बनाया ताकि वह महामान्य महारानी के पवित्र उद्‌देश्यों को स्वयं आकाश से सहायता दे।

हे क़ैसर: मुबारका ख़ुदा तुझे सलामत रखे और तेरी आयु और प्रतिष्ठा तथा सफलता से हमारे हृदयों को प्रसन्नता पहुंचाए। इस समय तेरी सरकार के काल में जो ईमानदारी से भरपूर है ख़ुदा की ओर से मसीह का आना यह गवाही है कि समस्त शहंशाहों में से तेरा अस्तित्व शान्ति शान्ति प्रियता, प्रबंध कुशलता, जनता की हमदर्दी न्याय और इन्साफ़ में बढ़कर है। मुसलमान और ईसाई दोनों पक्ष इस बात को मानते हैं कि मसीह मौऊद आने वाला है परन्तु इसी युग और काल में जबकि भेड़िया और बकरी एक ही घाट में पानी पिएंगे और सांपों से बच्चे खेलेंगे। अत: हे महामान्य महारानी क़ैसर: हिन्द वह तेरा ही काल और तेरा ही युग है। जिसकी आंखें हों देखे। और जो पक्षपात से रिक्त हो वह समझ ले। हे महामान्य महारानी यह तेरा ही शासन काल है जिसने दरिन्दों और ग़रीब पशुओं को एक स्थान पर जमा कर दिया है। ईमानदार जो बच्चों के समान हैं वे दुष्ट सापों के साथ खेलते हैं और तेरी शान्तिपूर्ण छाया के नीचे उन्हें कुछ भी भय नहीं। अब तेरे शासन-काल से अधिक शान्तिपूर्वक

और कौन सा शासन-काल होगा जिसमें मसीह मौऊद आएगा? हे महामान्य तेरे वे पवित्र इरादे हैं जो आकाशीय सहायता को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं और तेरी नेक नीयत का आकर्षण है जिससे आकाश दयापूर्वक पृथ्वी की ओर झुकता जाता है। इसलिए तेरे शासन-काल के अतिरिक्त अन्य कोई भी शासन-काल ऐसा नहीं है जो मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के लिए उचित हो। इसलिए ख़ुदा ने तेरे प्रकाशमान काल में आकाश से एक प्रकाश उतारा। क्योंकि प्रकाश-प्रकाश को अपनी ओर खींचता और अंधकार अंधकार को खींचता है। हे मुबारक और तेजस्वी महारानी जिन किताबों में मसीह मौऊद का आना लिखा है उन किताबों में स्पष्ट तौर पर तेरे अमनपूर्ण काल की ओर संकेत पाए जाते हैं। परन्तु अवश्य था कि मसीह मौऊद इसी प्रकार संसार में आता जैसा कि एलिया नबी यूहन्ना के लिबास में आया था। अर्थात् यूहना ही अपनी प्रकृति और स्वभाव से ख़ुदा के नज़दीक एलिया बन गया। अत: यहां भी ऐसा ही हुआ कि एक को तेरे मुबारक युग में ईसा अलैहिस्सलाम की प्रकृति और स्वभाव दिया गया। इसलिए वह मसीह कहलाया और अवश्य था कि वह आता। क्योंकि ख़ुदा के पवित्र लेखों का टलना संभव नहीं। महामान्य महारानी, हे समस्त प्रजा का गर्व! यह हमेशा से ख़ुदा की आदत है कि जब समय का शहंशाह ईमानदार और प्रजा की भलाई चाहने वाला हो तो वह जब अपनी शक्ति के अनुसार सार्वजनिक शान्ति और नेकी फैलाने की व्यवस्था कर चुकता है और प्रजा के आन्तरिक पवित्र परिवर्तनों के लिए उसका हृदय हमदर्द होता है तो आकाश पर उसकी सहायता के लिए ख़ुदा की दया जोश

मारती है और उसकी हिम्मत और इच्छानुसार कोई रूहानी इन्सान पृथ्वी पर भेजा जाता है और उस पूर्ण रिफारमर के अस्तित्व को उस न्यायवान बादशाह की ईमानदारी, हिम्मत, हमदर्दी, जन साधारण को पैदा करती है। यह तब होता है कि जब एक न्यायवान बादशाह एक सांसारिक मुक्ति दिलाने वाले के रूप में पैदा होकर पूर्ण हिम्मत और मानव-जाति की हमदर्दी की दृष्टि से स्वाभाविक तौर पर एक रूहानी मुक्ति दिलाने वाले को चाहता है। इसी प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के समय में हुआ। क्योंकि उस समय का क़ैसर-ए-रूम एक नेक नीयत इन्सान था और नहीं चाहता था कि पृथ्वी पर अत्याचार हो और मनुष्यों की भलाई और मुक्ति का अभिलाषी था। तब आकाश के ख़ुदा ने वह प्रकाश प्रदान करने वाला चांद नासिरा की ज़मीन से चढ़ाया अर्थात् ईसा मसीह। ताकि जैसा कि नासिरा के शब्द के मायने इब्रानी भाषा में शीतलता, ताज़गी और हरियाली है। यही हालत मनुष्यों के हृदयों में पैदा करे। अत: हमारी प्यारी क़ैसर: हिन्द ख़ुदा तुझे देर तक सलामत रखे। तेरी ईमानदारी और प्रजा की सच्ची सहानुभूति उस क़ैसर-ए-रूम से कम नहीं। अपितु हम ज़ोर से कहते हैं कि उससे बहुत अधिक है। क्योंकि तेरी दृष्टि के नीचे जितनी ग़रीब प्रजा है जिसकी तू हे महामान्य महारानी क़ैसर: हमदर्दी करना चाहती है और जिस प्रकार तू प्रत्येक पहलू से अपनी निराश्रय प्रजा की शुभ चिन्तक है और जिस प्रकार तू ने अपनी शुभ चिन्ता और प्रजा पालन के नमूने दिखाए हैं ये खूबियां और बरकतें पहले क़ैसरों में से किसी में भी नहीं पाई जातीं इसलिए तेरे हाथ के कार्य जो सर्वथा नेकी और दानशीलता से रंगीन हैं सबसे अधिक इस बात

को चाहते हैं कि जिस प्रकार तू हे महामान्य महारानी अपनी समस्त प्रजा की मुक्ति, भलाई और आराम के लिए हमदर्द है और प्रजा के पोषण के उपायों में व्यस्त है। इसी प्रकार ख़ुदा भी आकाश से तेरा हाथ बटाए। तो यह *मसीह मौऊद* जो संसार में आया तेरे ही अस्तित्व की बरकत और हार्दिक नेक नीयत और सच्ची हमदर्दी का एक परिणाम है। ख़ुदा ने तेरे शासन-काल में संसार के हमदर्दों को स्मरण किया और आकाश से अपने मसीह को भेजा और वह तेरे ही देश में और तेरी ही सीमाओं में पैदा हुआ ताकि संसार के लिए यह एक गवाही हो कि तेरी पृथ्वी के न्याय के सिलसिले ने आकाश के न्याय के सिलसिले को अपनी ओर आकर्षित किया और तेरी दया के सिलसिले ने आकाश पर एक दया का सिलसिला स्थापित किया। और चूंकि इस मसीह का पैदा होना सत्य और असत्य को अलग करने के लिए संसार पर एक अन्तिम अदेश है जिसके अुसार मसीह मौऊद *हकम* (मध्यस्थ) कहलाता है। इसलिए नासिरा की तरह जिसमें ताज़गी और हरियाली के युग की ओर संकेत था इस मसीह के गांव का नाम इस्लामपुर काज़ी माझी रखा गया। ताकि क़ाज़ी के शब्द से ख़ुदा के उस अन्तिम *हकम* की ओर संकेत हो जिस से चयन किए हुए लोगों को अनश्वर कृपा की ख़ुशख़बरी मिलती है और ताकि मसीह मौऊद का नाम जो *हकम* है उसकी ओर भी एक बारीक संकेत हो और इस्लामपुर क़ाज़ी माझी उस समय इस गांव का नाम रखा गया था जबकि बाबर बादशाह के शासन-काल में इस देश माझ प्रदेश का बड़ा इलाक़ा हुकूमत के तौर पर मेरे बुज़ुर्गों को मिला था और फिर धीरे-धीरे यह हुकूमत

स्वाधीन रियासत बन गई और इस्तेमाल की प्रचुरता से क़ाज़ी का शब्द क़ादी से बदल गया। फिर और भी परिवर्तित होकर क़ादियां हो गया। अत: *नासिरा* और *इस्लामपुर क़ाज़ी* का शब्द एक बड़े अर्थ पूर्ण नाम हैं। एक इनमें से रूहानी ताज़गी की ओर मार्ग दर्शन करता है और दूसरा रूहानी फैसले पर जो *मसीह मौऊद* का कार्य है। हे महामान्य महारानी क़ैसर: हिन्द ख़ुदा तुझे प्रताप और प्रसन्नता पूर्वक आयु में बरकत दे। तेरा शासन-काल क्या ही मुबारक है कि आकाश से ख़ुदा का हाथ तेरे उद्देश्यों का समर्थन कर रहा है। तेरी प्रजा से हमदर्दी और ईमानदारी के मार्गों को फ़रिश्ते साफ कर रहे हैं। तेरे न्याय का उत्तम वाष्पो बादलों के समान उठ रही हैं ताकि सम्पूर्ण देश को बसन्त का गौरव बना दें। दुष्ट है वह इन्सान जो तेरे शासन-काल की क़द्र नहीं करता और नीच है वह मनुष्य जो तेरे उपकारों का कृतज्ञ नहीं। चूंकि यह मामला प्रमाणित है कि दिल से दिल को राह होती है। इसलिए मुझे आवश्यकता नहीं कि अपनी भाषा की वाचालता से इस बात की अभिव्यक्ति करूं कि मैं आपसे हार्दिक प्रेम रखता हूं और मेरे हृदय में विशेष तौर पर आपका प्रेम और श्रेष्ठता है। हमारी दिन-रात की दुआएं आप के लिए बहते हुए पानी की तरह जारी हैं और हम न बलात राजनीति के अधीन होकर आपके आज्ञाकारी हैं बल्कि आपकी नाना प्रकार की ख़ूबियों ने हमारे हृदयों को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है। हे बरकत वाली क़ैसर: हिन्द तुझे यह तेरी श्रेष्ठता और कीर्ति मुबारक हो। ख़ुदा की निगाहें उस देश पर हैं जिस पर तेरी निगाहें हैं। ख़ुदा की दया का हाथ उस प्रजा पर है जिस पर तेरा हाथ है। तेरी ही पवित्र नीयतों

की तहरीक से ख़ुदा ने मुझे भेजा है ताकि संयम, पवित्र शिष्टाचार और मैत्री के मार्गों को दोबारा संसार में स्थापित करूं। हे महामान्य क़ैसर: हिन्द, मुझे ख़ुदा तआला की ओर से ज्ञान दिया गया है कि एक दोष मुसलमानों में और एक दोष ईसाइयों में ऐसा है जिस से वे सच्चे रूहानी जीवन से दूर पड़े हुए हैं और वह दोष उन्हें एक नहीं होने देता अपितु उनमें पारस्परिक फूट डाल रहा है। और वह यह है कि मुसलमानों में ये दो मामले नितान्त ख़तरनाक और सर्वथा ग़लत हैं कि वे धर्म के लिए तलवार के जिहाद को अपने धर्म का एक स्तंभ समझते हैं। और इस उन्माद से एक निर्दोष को क़त्ल करके ऐसा विचार करते हैं कि जैसे उन्होंने एक बड़े पुण्य का कार्य किया है। और यद्यपि इस देश ब्रिटिश इण्डिया में अधिकतर मुसलमानों की यह आस्था बहुत कुछ सुधर गई है और हज़ारों मुसलमानों के दिल मेरी बाईस-तेईस वर्षों के प्रयासों से साफ़ हो गए हैं। परन्तु इस में कुछ सन्देह नहीं कि कुछ अन्य देशों में ये विचार अब तक बड़ी तन्मयता से पाए जाते हैं। जैसे इन लोगों ने इस्लाम का सार और इत्र लड़ाई और जब्र को ही समझ लिया है, किन्तु यह राय कदापि सही नहीं है। क़ुर्आन में स्पष्ट आदेश है कि धर्म के प्रसार के लिए तलवार मत उठाओ और धर्म की व्यक्तिगत ख़ूबियों को प्रस्तुत करो और नेक आदेशों से अपनी ओर आकर्षित करो और मत सोचो कि प्रारंभ में इस्लाम में तलवार का आदेश हुआ, क्योंकि वह तलवार धर्म-प्रसार के लिए नहीं खींची गई थी अपितु शत्रु के आक्रमणों से स्वयं की रक्षा के लिए और या अमन स्थापित करने के लिए खींची गई थी। किन्तु धर्म के लिए जब्र करना कभी उद्देश्य

न था। अफ़सोस कि यह दोष जान बूझ कर काम ख़राब करने वाले मुसलमानों में अब तक मौजूद है जिसके सुधार के लिए मैंने पचास हज़ार से कुछ अधिक छोटी पत्रिकाएं, मज़बूत पुस्तकें और विज्ञापन इस देश तथा अन्य देशों में प्रकाशित किए हैं और आशान्वित हूं कि शीघ्र ही एक समय आने वाला है कि इस दोष से मुसलमानों का दामन पवित्र हो जाएगा।

हमारी क़ौम मुसलमानों में दूसरा दोष यह भी है कि वे एक ऐसे खूनी मसीह और ख़ूनी महदी के प्रतीक्षक हैं जो उनके गुमान में संसार को खून से भर देगा। हालांकि यह विचार ग़लत है। हमारी विश्वसनीय किताबों में लिखा है कि मसीह मौऊद कोई लड़ाई नहीं करेगा और न तलवार उठाएगा अपितु वह समस्त बातों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की प्रकृति और आचरण पर होगा और उनके रंग से ऐसा रंगीन होगा कि जैसे बिल्कुल वही होगा। ये दो दोष वर्तमान मुसलमानों में हैं। जिनके कारण उनके अधिकतर लोग अन्य कौमों से वैर रखते हैं, परन्तु मुझे ख़ुदा ने इसलिए भेजा है कि इन दोषों को दूर कर दूं और 'क़ाज़ी' और हकम का शब्द जो मुझे प्रदान किया गया है वह इसी फ़ैसले के लिए है।

इनके मुकाबले पर एक ग़लती ईसाइयों में भी है और वह यह है कि वे मसीह जैसे मुक़द्दस और महान के बारे में जिसे पवित्र इंजील में नूर कहा गया है नऊज़ुबिल्लाह लानत का शब्द चरितार्थ करते हैं और वे नहीं जानते कि 'लअन' और 'लानत' एक शब्द इब्रानी और अरबी में भागीदार है। जिसके ये मायने हैं कि मलऊन इन्सान का दिल ख़ुदा से पूर्णतया विमुख दूर और पृथक होकर ऐसा गन्दा और

अपवित्र हो जाए जिस प्रकार कोढ़ से शरीर गन्दा और ख़राब हो जाता है और अरब और इब्रानी के मातृभाषी इस बात पर सहमत हैं कि मलऊन या लानती किसी को केवल उसी हालत में कहा जाता है जब कि उसका दिल वास्तव में ख़ुदा से प्रेम, मारिफ़त और आज्ञापालन के संबंधों को तोड़ दे और शैतान का ऐसा आज्ञाकारी हो जाए मानो शैतान का पुत्र हो जाए और ख़ुदा उस से विमुख और वह ख़ुदा से विमुख हो जाए और ख़ुदा उसका शत्रु और वह ख़ुदा का शत्रु हो जाए। इसी लिए लईन शैतान का नाम है। फिर वही नाम हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के लिए प्रस्तावित करना और उनके पवित्र और उज्जवल हृदय को नऊज़ुबिल्लाह शैतान के अपवित्र हृदय से समानता देना और जो उनके कथनानुसार ख़ुदा से निकला है और जो सरासर नूर है और जो आकाश से है और वह जो ज्ञान का दरवाज़ा और ख़ुदा को पहचानने का मार्ग तथा ख़ुदा का वारिस है उसी के बारे में नऊज़ुबिल्लाह यह समझना कि वह लानती हो अर्थात् ख़ुदा से धिक्कृत होकर और ख़ुदा का शत्रु होकर तथा काला दिल होकर, विमुख होकर और ख़ुदा की मारिफत से अंधा होकर शैतान का उत्तराधिकारी बन गया और इस उपाधि का पात्र हो गया जो शैतान के लिए विशेष है अर्थात् लानत। यह एक ऐसी आस्था है कि इसको सुनने से दिल टुकड़े-टुकड़े होता है और शरीर थरथराता है। क्या ख़ुदा के मसीह का हृदय ख़ुदा से ऐसा विमुख हो गया जैसे शैतान का हृदय? क्या ख़ुदा के पवित्र मसीह पर कोई ऐसा समय आया जिसमें वह ख़ुदा से विमुख और वास्तव में ख़ुदा का शत्रु हो गया। यह बड़ी ग़लती और बड़ी असभ्यता है। क़रीब है कि इससे आकाश टुकड़े-टुकड़े हो जाए।

निष्कर्ष यह कि मुसलमानों के जिहाद की आस्था सृष्टि के पक्ष में एक बुरी सोच है और ईसाइयों की यह आस्था स्वयं ख़ुदा के पक्ष में बुरी सोच है। यदि यह संभव है कि प्रकाश के होते ही अंधकार हो जाए तो यह भी संभव है कि नऊज़ुबिल्लाह किसी समय मसीह के हृदय ने लानत की ज़हरीली हालत अपने अन्दर प्राप्त की थी। यदि इन्सानों की मुक्ति इसी असभ्यता पर निर्भर है तो अच्छा है कि किसी की भी मुक्ति हो क्योंकि समस्त पापियों का मरना इस बात की अपेक्षा अच्छा है कि मसीह जैसे प्रकाश और प्रकाशमान को, पथ भ्रष्टता के अंधकार, लानत और ख़ुदा की शत्रुता के गढ़े में डूबने वाला ठहरा दिया जाए। इसलिए मैं यह प्रयास कर रहा हूं कि मुसलमानों की वह आस्था और ईसाइयों की यह आस्था सुधर जाए और मैं धन्यवाद करता हूं कि ख़ुदा तआला ने मुझे इन दोनों इरादों में सफल किया है। चूंकि मेरे साथ आकाशीय निशान और ख़ुदा के चमत्कार थे। इसलिए मुसलमानों के क़ाइल करने के लिए मुझे बहुत कष्ट नहीं उठाना पड़ा और हज़ारों मुसलमान ख़ुदा के अद्भुत और विलक्षण निशानों को देख कर मेरे आज्ञाकारी हो गए और उन्होंने वे ख़तरनाक आस्थाएं त्याग दीं जो वहशियाना तौर पर उनके हृदयों में थीं और मेरा गिरोह एक सच्चा शुभ चिन्तक उस सरकार का बन गया है जो ब्रिटिश इण्डिया में सब से पहली श्रेणी पर हृदय में आज्ञा पालन का जोश रखते हैं जिससे मुझे बहुत प्रसन्नता है। और ईसाइयों का यह दोष दूर करने के लिए ख़ुदा ने मेरी वह सहायता की है कि मेरे पास शब्द नहीं कि मैं आभार व्यक्त कर सकूं। और वह यह है कि बहुत से ठोस तर्कों तथा नितान्त सुदृढ़ कारणों से यह सिद्ध हो गया है कि हज़रत मसीह

अलैहिस्सलाम सलीब पर नहीं मरे अपितु ख़ुदा ने उस पवित्र नबी को सलीब पर से बचा लिया और आप ख़ुदा तआला की कृपा से मृत्यु न पाकर अपितु जीवित ही क़ब्र में बेहोशी की अवस्था में दाख़िल किए गए और फिर जीवित ही क़ब्र से निकले। जैसा कि आप ने इंजील में स्वयं फ़रमाया था कि मेरी हालत यूनुस नबी की हालत के समान होगी। आप की इंजील में ये शब्द हैं कि यूनुस नबी का चमत्कार दिखलाऊंगा तो आपने यह चमत्कार दिखलाया कि जीवित ही क़ब्र में दाख़िल हुए और जीवित ही निकले। ये वे बातें हैं जो इंजील से ज्ञात होती हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त एक बड़ी ख़ुशख़बरी जो हमें मिली है वह यह है कि ठोस तर्कों द्वारा सिद्ध हो गया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र श्रीनगर कश्मीर में मौजूद है और यह बात सबूत को पहुंच गई है कि आप यहूदियों के देश से भाग कर नसीबैन के मार्ग से अफ़ग़ानिस्तान में आए और एक समय तक कोहे नुअमान में रहे और फिर कश्मीर में आए और एक सौ बीस वर्ष की आयु पाकर आपका स्वर्गवास श्रीनगर में हुआ और मुहल्ला ख़ानयार में आप का मज़ार है। अत: इस बारे में मैंने एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है- **'मसीह हिन्दुस्तान में'** यह एक बड़ी विजय है जो मुझे प्राप्त हुई है और मैं जानता हूं कि शीघ्र ही या कुछ देर से इसका यह परिणाम होगा कि ये दो बड़ी क़ौमें ईसाइयों और मुसलमानों की जो लम्बे समय से बिछड़ी हुई हैं परस्पर मिल जाएंगी और बहुत से झगड़ों को अलविदा कह कर प्रेम और मित्रता पूर्वक परस्पर हाथ मिलाएंगी। चूंकि आकाश पर यही इरादा तय हुआ है इसलिए हमारी अंग्रेज़ी सरकार का भी क़ौमों की एकता की ओर बहुत ध्यान हो

गया है। जैसा कि सडेशन के कानून की कुछ धाराओं से प्रकट है। असल भेद यह है कि जो कुछ आकाश पर ख़ुदा तआला की ओर से एक तैयारी होती है पृथ्वी पर भी वैसे ही विचार सरकार के हृदय में उत्पन्न हो जाते हैं। अत: हमारी महामान्य महारानी की नेक नीयत के कारण ख़ुदा तआला ने आकाश से ये साधन पैदा कर दिए हैं कि ईसाइयों और मुसलमानों की दोनों क़ौमों में वह एकता पैदा हो जाए कि इन को दो क़ौम न कहा जाए।

अब इसके पश्चात् मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में कोई बुद्धिमान यह आस्था कदापि नहीं रखेगा कि नऊज़ुबिल्लाह किसी समय उनका दिल लानत की ज़हरीली हालत से रंगीन हो गया था, क्योंकि लानत सलीब पर फांसी देकर मार चुकने का परिणाम था। फिर जबकि सलीब पर मरना सिद्ध न हुआ अपितु यह सिद्ध न हुआ कि आप की उन दुआओं की बरकत से जो सारी रात बाग़ में की गई थीं और फ़रिश्ते की उस इच्छानुसार जो पिलातूस की पत्नी के स्वप्न में हज़रत मसीह के बचाव की सिफ़ारिश के लिए प्रकट हुआ था★ और स्वयं हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के इस उदाहरण के

★हाशिया :- यह बात किसी प्रकार स्वीकार करने योग्य नहीं और इस बात को किसी बुद्धिमान की अन्तर्आत्मा स्वीकार नहीं करेगी कि ख़ुदा तआला का तो यह दृढ़ इरादा हो कि मसीह को फांसी दे परन्तु उसका फ़रिश्ता अकारण मसीह को छुड़ाने के लिए तड़पता फिरे। कभी पिलातूस के हृदय में मसीह का प्रेम डाले और उसके मुंह से यह कहलाए कि मैं यसू का कोई गुनाह नहीं देखता और कभी पिलातूस की पत्नी के पास स्वप्न में जाए और उसे कहे कि यदि यसू मसीह को फांसी मिल गई तो फिर इसमें तुम्हारी ख़ैर नहीं है। यह कैसी विचित्र बात है कि फ़रिश्ते का ख़ुदा से राय में मतभेद। (इसी से)

अनुसार जो आप ने यूनुस नबी का तीन दिन मछली के पेट में रहना अपने अंजाम का एक नमूना ठहराया था। आपको ख़ुदा तआला ने सलीब और उसके परिणाम से जो लानत है मुक्ति प्रदान की और आप की यह पीड़ादायक आवाज़ कि 'ईली ईली लिमा सबकतानी' ख़ुदा के दरबार में सुनी गई। यह वह ख़ुला-ख़ुला सबूत है जिससे प्रत्येक सत्याभिलाषी का हृदय सहसा प्रसन्नता पूर्वक उछल पड़ेगा। अत: निस्सन्देह यह हमारी महामान्य महारानी क़ैसर: हिन्द की बरकतों का एक फल है जिसने हज़रत मसीह अलैहिस्लाम के दामन को लगभग उन्नीस सौ वर्ष के अनुचित लांछन से पवित्र किया।

अब मैं उचित नहीं समझता कि इस प्रार्थना-पत्र को लम्बा करूं। यद्यपि मैं जानता हूं कि मेरे हृदय में जितना यह जोश था मैं अपनी निष्कपटता और आज्ञापालन तथा कृतज्ञता को हुज़ूर क़ैसर: हिन्द में निवेदन करूं पूर्ण रूप से मैं इस जोश को अदा नहीं कर सका। विवश होकर दुआ पर समाप्त करता हूँ कि अल्लाह तआला जो पृथ्वी और आकाश का मालिक और शुभ कार्यों का शुभ प्रतिफल देता है वह आकाश पर से इस उपकारी क़ैसर: हिन्द (दामा मुल्कहा) को हमारी ओर से शुभ प्रतिफल दे। और वह कृपा उसके साथ करे जो न केवल संसार तक सीमित हो अपितु सच्ची और स्थायी समृद्धि जो आख़िरत को होगी वह भी प्रदान करे और उसे प्रसन्न रखे तथा उसके लिए अनश्वर प्रसन्नता पाने के सामान उपलब्ध करे और अपने फ़रिश्तों को आदेश करे ताकि इस मुबारक क़दम महारानी को जो प्रजा पर इतनी दया-दृष्टि रखने वाली है अपने इस इल्हाम से प्रकाशमान करे जो बिजली की चमक की तरह एक पल में उतरती और सम्पूर्ण सीने

को रोशन करती और कल्पना से बढ़कर परिवर्तन कर देती है। हे मेरे मा'बूद! हमारी महामान्य महारानी क़ैसर: हिन्द को हमेशा प्रत्येक पहलू से प्रसन्न रख और ऐसा कर कि तेरी ओर से एक सर्वोच्च शक्ति उसको तेरे हमेशा के प्रकाशों की ओर खींच कर ले जाए और अनश्वर आनन्द में दाख़िल करे कि तेरे आगे कोई बात अनहोनी नहीं। आमीन और सब कहें कि आमीन।

प्रार्थी

ख़ाकसार- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
20 अगस्त 1899ई.